प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान

(आराज़ी नं. 469, सत्यम् नगर कॉलोनी, भगवानपुर, बी.एच.यू,
वाराणसी, उ.प्र., पिन-221005)

द्वारा प्रस्तावित

आधुनिक-संस्कृतसाहित्य-सङ्कलन-परियोजना

(संस्थान के षाण्मासिक-पीयर रिव्यूड् जर्नल 'प्रत्नकीर्ति' में स्वतन्त्र-आलेख, रिव्यू, समीक्षा,
अलोचना के ज़रीए 'संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास' (40 खण्ड)
एवं 'लौकिक-संस्कृत-साहित्य-विश्वकोश' (25 खण्ड)
के निर्माण की अङ्गीभूत तथा
'काशी में आधुनिक-संस्कृत-साहित्य-संग्रह'
हेतु एक महत्त्वाकांक्षी परियोजना)

परियोजना-परिचायिका

विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्
प्रत्नकीर्तिमपावृणु
अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण
एवं प्राच्य शोध संस्थान, वाराणसी

आधुनिक-संस्कृतसाहित्य-सङ्कलन-परियोजना

संरक्षक-मण्डल

*

आचार्य कलानाथ शास्त्री,
विश्रुत संस्कृत-सेवी, कवि, समीक्षक, जयपुर, राज.

*

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी,
पूर्वकुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्याल, नई दिल्ली

*

आचार्य रहस बिहारी द्विवेदी,
विश्रुत संस्कृत-आचार्य एवं आलोचक, जबलपुर, (म.प्र.)

*

आचार्य पेन्ना मधुसूदन,
विश्रुत संस्कृत-साहित्य-सेवी, तेलङ्गाना.

*

आचार्य हरिदत्त शर्मा,
पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इला.

*

आचार्य हर्षदेव माधव,
विश्रुत संस्कृत-कवि एवं समीक्षक, गुजरात

*

डॉ. बलदेवानन्द सागर,
बहुश्रुत संस्कृत-समाचार-वाचक, आकाशवाणी, दिल्ली.

*

आचार्य प्रफुल्ल कुमार मिश्र,
उपाध्यक्ष, म.-सान्दीपनी-राष्ट्रीय-वेदविद्या-प्रति., उज्जैन, म.प्र.

*

आचार्य वनमाली विश्वाल,
निदेशक (शोधपीठ), के. सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.

*

आचार्य रमाकान्त पाण्डेय,
निदेशक, के. सं. विश्वविद्यालय, भोपाल, म.प्र.

*

आचार्य मदनमोहन झा,
निदेशक, के. सं. विश्वविद्यालय, जम्मू, .

*

आचार्य सम्पदानन्द मिश्र,
ऋषिहुड् यूनिवर्सिटी, हरियाणा.

आधुनिक-संस्कृतसाहित्य-सङ्कलन-परियोजना

प्रान्तीय साहित्य-संग्राहक प्रतिनिधि

उत्तर-प्रदेश

डॉ. नवलता
बहुश्रुत-कवयित्री, आचार्या, कानपुर

डॉ. जगदानन्द झा
उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थान, लखनऊ

डॉ. अरविन्द कुमार तिवारी,
अमरवाणी-कवि-परिषद्, बागपत

उत्तराखण्ड

प्रो. रामविनय सिंह,
डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, देहरादून

उड़ीसा

डॉ. प्रियव्रत मिश्र
जगन्नाथ सं. विश्वविद्यालय, पुरी

झारखण्ड

डॉ. विन्ध्याचल पाण्डेय
पूर्व प्रधानाचार्य, नेतरहाट आवासीय विद्यालय, राँची

डॉ. धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
संस्कृत-विभाग, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

डॉ. विमलेन्दु कुमार त्रिपाठी,
गिरिडीह, झारखण्ड

जम्मू कश्मीर

डॉ. करतारचन्द शर्मा,
कश्मीर यूनिवर्सिटी, कश्मीर

तेलङ्गाना

डॉ. अब्दुल ग़नी,
विश्रुत संस्कृत-उर्दू स्कॉलर, भोंगीर

बिहार

डॉ. पुष्कर आनन्द,
आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, दरभङ्गा

डॉ. सञ्जय चौबे,
हरप्रसाददास जैन महाविद्यालय, आरा, भोजपुर

मध्य-प्रदेश

डॉ. लक्ष्मीनारायण पाण्डेय
पूर्वाचार्य, गवर्नमेंट संस्कृत-कॉलेज, भोपाल

डॉ. माला प्यासी
शास. महाकोशल कला-वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर

डॉ. इला घोष
संस्कृत-आचार्या, जबलपुर, म.प्र.

राजस्थान

प्रो. लालाशङ्कर गयावाल
राजकीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर

प्रो. प्रवीण पण्ड्या
विश्रुत आलोचक, कवि, अनुवादक, जालौर

प्रो. पूर्णचन्द्र उपाध्याय
राजकीय महाविद्यालय, बूँदी

हिमाचल-प्रदेश

डॉ. राजीव त्रिगर्ती,
विश्रुत हिन्दी-पहाड़ी कवि, लंघू, बैजनाथ, काँगड़ा

डॉ. सत्यप्रकाश पाठक
योग-अध्ययन-विभाग, हि.प्र. विश्वविद्यालय, शिमला

प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान

(आराजी नं. 469, सत्यम् नगर कॉलोनी, भगवानपुर, बी.एच.यू., वाराणसी, उ.प्र., पिन-221005)

द्वारा प्रस्तावित

आधुनिक-संस्कृतसाहित्य-सङ्कलन-परियोजना

(संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास (40 खण्ड) एवं लौकिक-संस्कृत-साहित्य-विश्वकोश (25 खण्ड) की अङ्गीभूत परियोजना)

सम्मान्य संस्कृतानुरागी आदरणीय आचार्यगण, साहित्यकार, रचनाधर्मी, समीक्षक, आलोचक-वृन्द, सहृदय, छात्र, मित्र, बन्धु तथा बान्धवों! सादर प्रणाम।

वर्षों से काशी को अभीप्सित, अत्यन्त आवश्यक एवं अपरिहार्य एक सारस्वत यज्ञ की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान अपना पुनीत कर्तव्य समझता है और आज इस कर्तव्य के साथ आपके समक्ष उपस्थित होने पर गौरव की अनुभूति करता है। कृपया इस सारस्वत यज्ञ को निम्नलिखित बिन्दुओं के अध्यधीन आत्मसात् करें और अनुरूप पाए जाने की स्थिति में तदनुकूल व्यवहार कर संस्कृत के भविष्यत्कालीन इतिहास को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने में अपना अमूल्य योगदान दे संस्कृत-समाज को उपकृत करें-

काशी में संस्कृत-साहित्य संग्रह का इतिहास

‘सर्वविद्या की राजधानी’ काशी उत्तरवैदिक काल से लगायत 21-वीं सदी तक और आज तक ‘संस्कृत-आराधना एवं साहित्य-प्रणयन’ का केन्द्र रही है। बृहत्तर भारत के बाद ब्रिटिश-भारत और आज स्वतंत्र-भारत के सुदूर प्रान्तों में प्रणीत संस्कृत-साहित्य को संरक्षित एवं सर्वसाधारण को उपलब्ध कराने की दृष्टि से काशी के पुस्तकालय इतिहास में विख्यात रहे हैं। 17-वीं सदी में ‘कवीन्द्राचार्य सरस्वती’ का पुस्तकालय इस क्रम में उल्लेखनीय है। 19-वीं एवं 20-वीं सदी में प्रणीत अपार संस्कृत-साहित्य के कुछ छिटपुट रत्न ‘सरस्वती-भवन-पुस्तकालय’ एवं ‘कारमाइकल-लायब्रेरी’ में उपलब्ध थे किन्तु इस प्रकार का साहित्य-संग्रह करना चूँकि इन पुस्तकालयों का उद्देश्य न था इसलिए इनमें इस साहित्य की कमी पायी जाती रही।

हालाँकि ‘विश्वनाथ-गोयनका-पुस्तकालय’ का भी ऐसा कोई उद्देश्य न था किन्तु गवेषकों और आगन्तुकों की संख्या के कारण अपने-अपने समय के साहित्यकारों ने इस लायब्रेरी को अपनी साहित्यिक-कृतियाँ भेज समृद्ध

किया। मेरी अपनी जानकारी और अनुभव के मुताबिक 1990 ई० के बाद से यह क्रम भी टूट गया और आगे का साहित्य यहाँ संरक्षित न हो सका।

इस क्रम में 70' के दशक से लगायत 20-वीं सदी के अन्तिम दशक तक 'सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार-संस्थान' भी इस विषय का बड़ा भारी और इस मध्यावधि में प्रणीत संस्कृत-साहित्य का उल्लेखनीय संग्राहक केन्द्र रहा। मैंने इसकी सूची बनाई थी जिसमें लगभग 2200 से अधिक साहित्यिक कृतियाँ उपलब्ध थीं।

वर्तमान परिदृश्य

'सरस्वती-भवन-पुस्तकालय' विशुद्ध शोध-सन्दर्भात्मक होने से इस क्षेत्र में उदासीन है और ऐसे किसी संग्रह में इसकी कोई रुचि या सहभागिता नहीं। 1878 ई० में स्थापित 'कारमाइकल-लायब्रेरी' 1970 या इसके पिछले दशक से ही संस्कृत-समाज से दूर होता गया फलतः यहाँ भी आधुनिक साहित्य संरक्षित न हो सका। वर्ष 2004 ई० में पं० वासुदेव द्विवेदी जी के गोलोक-गमन के बाद से न वह 'सार्वभौम' रहा न द्विवेदी जी का वह पुस्तकालय। 'विश्वनाथ-गोयनका-पुस्तकालय' पूर्व से ही संसाधन-विहीन होने के कारण इस प्रकार के साहित्य को संरक्षित रखने में असमर्थ था, फलतः इसने प्राप्त होने वाली साहित्यिक कृतियों की यथार्थ सूची न बनाई और न ही कृतियों को संरक्षित रखने का कोई विशेष उद्यम किया। बाद में काशीविश्वनाथ-कॉरीडोर के निर्माण हेतु यह पुस्तकालय ध्वस्त और अन्यत्र कहीं (सम्भवतः अपने मूल महाविद्यालीय परिसर में) स्थानान्तरित हुआ किन्तु अभी तक मूर्त रूप में न आ सका।

इस प्रकार देखें तो वर्ष 2000 से लेकर आज की तारीख़ तक प्रणीत संस्कृत का वर्तमान साहित्य काशी में किसी भी एक पुस्तकालय या किसी एक वैयक्तिक संग्रहालय में संरक्षित नहीं। अपनी प्रकृति में इसकी गम्भीरता को देखें तो स्पष्ट तो यह है कि समूची 20-वीं सदी में प्रणीत संस्कृत का वर्तमान साहित्य काशी के किसी पुस्तकालय या वैयक्तिक संग्रहालय में एकत्र संरक्षित नहीं हैं।

प्रत्नकीर्ति का उद्देश्य

संस्कृत-विद्या की किसी भी विधा में अध्ययन, अध्यापन, शोध-अनुसन्धान से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु कभी-न-कभी काशी आता ही है। बल्कि कहना यह चाहिए कि काशी आए बगैर उसका उद्देश्य साङ्गोपाङ्ग पूरा नहीं होता। संस्कृत के वर्तमान साहित्य-संग्रह के साथ भी ऐसा ही है। सहृदय हो या अनुसन्धाता सम्बन्धित काल, विधा, विषय और लेखक की कृतियों को ढूँढता; बड़े विश्वास से काशी आता और मायूस लौटता है।

साहित्य-संरक्षण में काशी की अपनी संस्कृति और उसके गौरवपूर्ण इतिहास के विपरीत परिस्थितियों के समानान्तर प्रत्नकीर्ति सर्वसाधारण संस्कृत-समाज के समक्ष यह परियोजना बड़े गौरव के साथ प्रस्तुत करती है, जिसके निम्नलिखित दो उद्देश्य हैं-

1. 'समग्र भारत से प्रकाशित एवं प्रकाश्यमान आधुनिक-संस्कृतसाहित्य की पुस्तकों को एक स्थान पर सङ्कलित करना और सहृदयों तथा सम्बन्धित क्षेत्र के अनुसन्धानकर्मियों को उपलब्ध कराना।'

2. प्रत्नकीर्ति द्वारा प्रवर्तित 'संस्कृत-साहित्य का बृहद् इतिहास' (अनुमानतः 40 खण्डों में समाप्य) शीर्षक परियोजना के अन्तर्गत 'आधुनिक-संस्कृत-साहित्य' (1857-1947), 'वर्तमान-संस्कृत-साहित्य' (1947-2000) एवं 'अद्यतनीन-संस्कृत-साहित्य' (2001 से अद्यावधि) के अध्ययन, लेखन, सम्पादन एवं प्रकाशन में इन ग्रन्थों का प्रत्यक्ष उपयोग।

2.1. इसी प्रकार संस्थान की दूसरी विशाल एवं अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी परियोजना 'लौकिक-संस्कृत-साहित्य विश्वकोष' (अनुमानतः 25 खण्डों में समाप्य एवं ऑन-लाइन तथा ऑफ-लाइन दोनों ही रूपों में प्रकाश्य) के अन्तर्गत 'आधुनिक-संस्कृत-साहित्य' (1857-1947), 'वर्तमान-संस्कृत-साहित्य' (1947-2000) एवं 'अद्यतनीन-संस्कृत-साहित्य' (2001 से अद्यावधि) के अध्ययन, लेखन, सम्पादन एवं प्रकाशन में इन ग्रन्थों का प्रत्यक्ष उपयोग।

2.2. उपर्युक्त इतिहास एवं विश्वकोष में प्रत्यक्ष उपयोग से पूर्व प्राप्त ग्रन्थों का संस्थान के षाण्मासिक पीयर् रिव्यूड् जर्नल 'प्रत्नकीर्ति' में रिव्यू, परिचयात्मक, विवेचनात्मक, समीक्षात्मक तथा आलोचनात्मक आलेखों के रूप में उपयोग।

साहित्यकारों से अपील

विदित हो कि प्रत्नकीर्ति के अपने पुस्तकालय में दर्जनों आधुनिक संस्कृत-साहित्यकारों की सैकड़ों प्रकाशित पुस्तकों का संग्रह है, जिसे संस्थान के संस्थापक ने अपने वित्तीय-भार से सङ्कलित किया और आज भी करते हैं। किन्तु यह श्रम एवं अर्थ-साध्य होने के कारण वैसा कारगर उपाय नहीं अतः आज यह संस्थान अपने व्यवस्थित पुस्तकालय की ओर से संस्कृत के वर्तमान सेवियों, रचनाकारों, कवियों और संस्कृत-मात्र से जुड़े उन तमाम व्यक्तियों से; जो इस भाषा और साहित्य पर तनिक भी गर्व करते हैं, - अनुरोध करता है, कि-

'संस्कृत-साहित्य की किसी भी विधा या विषय पर प्रत्यक्ष रचनात्मक कार्य में व्यापृत साहित्यकार, शास्त्रकार अथवा साहित्य-समीक्षक अपनी प्रकाशित कृति की एक प्रति प्रत्नकीर्ति को भेजें।'

स्मरण रहे कि प्रत्नकीर्ति किसी भी प्रकार के सर्वकारीय, गैरसर्वकारीय अथवा निजी क्षेत्र की किसी भी प्रकार की सहायता के बिना सञ्चालित होने वाला संस्थान है अतः यह संस्थान आपकी अमूल्य कृतियों को समूल्य एकत्रित नहीं कर सकता। किन्तु सहृदय-समाज तथा अनुसन्धान-जगत् में इसकी भारी आवश्यकता के कारण इस कार्य से स्वयं को पृथक् भी नहीं रख सकता।

प्रत्नकीर्ति में साहित्य-संग्रह का लाभ

जैसाकि ऊपर कहा गया है कि 'सर्वविद्या' विशेष कर 'संस्कृत-विद्या' की प्रत्यक्ष राजधानी होने के बावजूद काशी में ऐसा कोई पुस्तकालय या वैयक्तिक संग्रहालय नहीं जहाँ आधुनिक संस्कृत-साहित्य की पुस्तकों का एकत्रित संग्रह उपलब्ध हो, उपर्युक्त रूप में यदि वर्तमान संस्कृत-रचनाधर्मियों की प्रकाशित कृतियाँ यहाँ संगृहीत होती हैं, काशी तो काशी स्वयं संस्कृत-रचनाधर्मियों एवं संस्कृत-साहित्येतिहास के लिए सौभाग्य की बात होगी। सहृदयों को एक ही जगह आधुनिक संस्कृत-साहित्यिक कृतियों के आस्वाद का अवसर प्राप्त होगा तो सम्बन्धित विषय में अनुसन्धित्सुओं को शोध-सामग्री प्राप्त होगी, जिससे साहित्यिक शोध-अनुसन्धान सहित साहित्य-समीक्षा एवं आलोचना की प्रत्यक्ष धारा अपने वैश्विक स्वरूप को प्राप्त कर सकेगी।

स्वयं यह संस्थान उपर्युक्त अपनी दो अति-महत्त्व की परियोजनाओं की पूर्ति में इस संग्रह का प्रत्यक्ष उपयोग कर सकेगा और संस्कृत को 40 खण्डों में 'साहित्य का बृहद् इतिहास' एवं 25 खण्डों में 'लौकिक-साहित्य विश्वकोष' प्रस्तुत कर सकेगा।

अन्यच्च -

विदित हो कि **'प्रत्नकीर्ति'** के नाम से संस्थान का अपना एक **षाण्मासिक पीयर रिव्यूड् जर्नल** भी है जो **ऑन-लाइन तथा प्रिंट; दोनों रूपों में** प्रकाशित होता है। व्यवस्थित समीक्षक एवं सम्पादक-मण्डल के अधीन और **प्रो. लालाशङ्कर गयावाल** (भरतपुर, राज.) तथा **डॉ. उमेश कुमार सिंह** (पन्तनगर, उत्तराखण्ड) के सम्पादकत्व में निकलने वाली इस पत्रिका में समीक्षा एवं आलोचना के वर्तमान मानदण्डों पर बहुत सूक्ष्मता से साहित्यिक तथा अन्यान्य विधाओं की कृतियों का परिचय, समीक्षा एवं अलोचना भी प्रकाशित किया जाता है। इसके पिछले अङ्कों में दर्जनों कृतियों पर 'रिव्यू' और 'समीक्षा' प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस रूप में यदि लेखक हमें इस योजना के अन्तर्गत अपनी साहित्यिक कृतियाँ प्रेषित करते हैं तो उनके लिए यह सुविधा होगी कि सम्बन्धित पुस्तक पर 'उचित' एवं पत्रिका के मानदण्डों पर लिखित समीक्षा भी भेज सकते हैं जिसे हम इस पत्रिका में प्रकाशित करने को प्रतिश्रुत होंगे। यदि लेखक समीक्षा कराने में असमर्थ है तो इसकी सुविधा भी 'प्रत्नकीर्ति' उन्हें प्रदान करती है किन्तु इस दशा में उन्हें पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजनी होंगी, एक प्रति संस्थान के लिए और दूसरी समीक्षक आचार्य के लिए।

धन्यवाद. 20/06/2023

निवेदक-
सचिव;
प्रत्नकीर्ति-प्राच्य-शोध-संस्थान, वाराणसी.

****

प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान

द्वारा प्रस्तावित

आधुनिक-संस्कृतसाहित्य-सङ्कलन-परियोजना

में पुस्तकें भेजने हेतु सम्पर्क-सूत्र

सचिव-

प्रत्नकीर्ति प्राच्य शोध संस्थान,
आराज़ी नं. 469, सत्यम् नगर कॉलोनी, भगवानपुर, बी.एच.यू,
वाराणसी, उ.प्र., पिन-221005

दूरभाष - 9415697016/6392053732
Email: PRATNAKIRTI@GMAIL.COM